International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 509-511

कम्प्यूटर प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि

डॉ. देवेश मुदगल

प्राचार्य, चिल्ड्रन्स एकेडमी बी. एड. कॉलेज, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

"शिक्षा समाज की आधारशिला है।" समाज में जिस जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होगी उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। अतः इस बात का सदैव प्रयत्न किया गया है कि शिक्षा उद्देश्य के अनुकूल हो।

विज्ञान के वरदान के रूप में मानव को असंख्य चीजें प्राप्त हुई। आज लगभग प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का हस्तक्षेप है। इसी तारतम्य में विज्ञान ने मानव को अनेकों अविष्कारों एवं तकनीकी उपलब्धियों का एक वरदान कम्प्यूटर के रूप में प्रदान किया है। जो गणितीय, मानसिक व तार्किक समस्या को हल करने व गणना के क्षेत्र में अत्यंत समृद्ध है। समस्याओं का तीव्र हल संभव हो सका है। कम्प्यूटर द्वारा बहुत से कार्यों को सफलता पूर्वक किया जा रहा है तथा आज अनेक क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता बढ़ गई है। कृषि, सूचना, संचार, अंतरिक्ष, मौसम विज्ञान एवं अनुसंधान क्षेत्र में कम्प्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है।

जहाँ तक शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर के प्रयोग का प्रश्न है तो विकसित देशों में इसका प्रयोग शिक्षा के अंर्तगत सामान्य है। लेकिन भारत के संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि अभी यहाँ पर इसके प्रयोग पर भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा विशेष रूची लेने के कारण इसकी गति बढ़ी और तीव्र गति से शिक्षा में इसका प्रयोग प्रारंभ हुआ। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज कम्प्यूटर शिक्षा की माँग बढ़ने लगी है। संख्याओं की गणना से लेकर जटिल गणितीय प्रश्नों को हल करना कम्प्यूटर के लिए कोई कठिन कार्य नहीं है। शिक्षा में कम्प्यूटर की उपयोगिता की कोई सीमा नहीं है। अभी तक जो कार्य मनोविज्ञान द्वारा संभव था अब कम्प्यूटर द्वारा कार्यान्वित हो रहा है। जैसे बालक को कब कितनी और किस प्रकार की शिक्षा दी जाए। कम्प्यूटर द्वारा इसकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

मानव के जीवन में आज कम्प्यूटर एक अभिन्न अंग बन गया है। इसकी उपयोगिता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ती जा रही है और प्रत्येक क्षेत्रों में यह अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर रहा है। यही कारण है कि आज यह संसार का सबसे लोकप्रिय साधन बनता जा रहा है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर द्वारा लगभग सभी प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं और प्रत्येक क्षेत्रों जैसे शिक्षा और समाज में क्रांतिकारी परिर्वतन का कारण एक हद तक कम्प्यूटर ही है। आज स्थिति यह है कि कम्प्यूटर घर–घर पहुँच रहा है। "शिक्षा समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा, अतः इस बात का सदैव प्रयत्न करना चाहिये कि शिक्षा के उद्देश्य अनुकूल हो।"

यह युग कम्प्यूटर का युग है। इलेक्ट्रॉनिक क्रांति का असर हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू पर व्यास दिखाई देता है। अतः शिक्षा की प्रक्रिया समय और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बदली जानी चाहिए। शिक्षा प्रक्रिया का निरंतर चलना समाज एवं राष्ट्र के हित में आवश्यक है। जब तक विश्व प्राणवान रहेगा शिक्षा प्रक्रिया को चलायमान रखना आवश्यक है।

शिक्षा में कम्प्यूटर

शिक्षा में मुख्य रूप से कम्प्यूटर तीन प्रकार से उपयोग में आता है:–

- शोध उपकरण के रूप में
- प्रबंधन उपकरण के रूप में
- शिक्षण अधिगम मशीन के रूप में

शोध उपकरण तथा प्रबंध उपकरण के रूप में कम्प्यूटर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय है। लेकिन अब शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में भी यह काफी लोकप्रिय होता जा रहा है। कम्प्यूटर के प्रयोग से शिक्षण की दो विधियाँ है:–

1. कम्प्यूटर की मदद से दी जाने वाली शिक्षा में छात्र सीधे सक्रिय रहते हैं और शैक्षिक सामग्री कम्प्यूटर पद्धति से एकत्रित की जाती है।
2. दूसरी विधि में शिक्षक हार्डवेयर तथा अध्ययन सामग्री पर आश्रित रहता है। इसमें छात्रों का कम्प्यूटर से सीधा संबंध नहीं होता है।

कम्प्यूटर शिक्षा से लाभ एवं महत्व

- श्रव्य शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रिया के लिए कम्प्यूटर अति प्रभावी श्रव्य दृश्य उपकरण है।
- कम्प्यूटर के प्रयोग से विशेषकर मानचित्रों एवं आकृति के रेखांकन में काफी समय की बचत होती है।
- सांख्यिकी ग्राफों की सहायता से विभिन्न पक्षों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अर्थशास्त्र को सरल बनाया जा सकता है।
- सांख्यिकी ग्राफों को देखकर छात्र अपनी समझ से विभिन्न पक्षों का आंकलन कर सकता है जो विद्यार्थी के सोचने–विचारने की क्षमता को बढ़ाने में सहायक होगा।
- ऊबाउ भाषण व पठन की तुलना में सी.डी. में उपलब्ध क्लिप, एनिमेशन की सहायता से इतिहास शिक्षण के स्तर में अभिवृद्धि की जा सकती है।
- कम्प्यूटर निर्मित पाठयोजना न सिर्फ रूचिकर होगी, बल्कि सहज रूप से संक्षिप्त एवं परिमाण अभिमुख होगी।
- अंग्रेजी जिसमें छात्रों का स्तर निराशाजनक है कम्प्यूटर के उपयोग से सुधारी जा सकती है।
- सरल से कठिन, मूर्त से अमूर्त शिक्षण मॉडलों को कम्प्यूटर की सहायता से प्रभावी ढंग से निर्मित किया जाता है।
- गणित से संबंधित आकृतियाँ जैसे – शंकु, बेलन, दीर्घ वृत आदि के चित्रांकन में श्यामपट के स्थान पर कम्प्यूटर के प्रयोग से गणित जैसे विषयों को अधिक रूचिकर बनाया जा सकता है।

संवेग (Emotion) – संवेग शब्द अंग्रेजी शब्द '**Emotion**' का पर्यायवाची है। इसका लैटिन स्वरूप इमोवियर (Emovere) है जिसका अर्थ है हिला देना, उत्तेजित करना। जब भी संवेग की

स्थिती आती है, व्यक्ति में बेचैनी आ जाती है। वह कुछ भी असमान्य व्यवहार प्रकट कर सकता है, हृद्य की धड़कन बढ़ सकती है, आँखों में आंसू बह सकते है, चेहरे पर मलिनता छा सकती है। अचेतन में व्याप्त अनेक सुप्त व्यवहार जागृत हो सकते है।

बोरिंग, लैंगफील्ड एवं वील्ड के अनुसार – "संवेग प्रभावशाली अनुक्रिया के समान होता है। यह शरीर के सामान्य एवं शारीरिक प्रतिक्रियाओं के रूप में व्यक्त होता है। संवेग को हम निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकता है–

- संवेग अचानक ही उत्पन्न होते हैं।
- संवेग शरीर में बाधायें उत्पन्न करते हैं।
- संवेग का आधार मनोविज्ञान होता है।
- संवेग बाह्य या आंतरिक उद्दीपन के परिणाम स्वरूप होता है।
- संवेग की उपस्थिति से शारीरिक क्रियाओं में व्यवहारिक परिर्वतन होता है।

बुद्धि (Intaligence) – बुद्धि मनुष्य की वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति अनुक्रिया करता है। वह वातावरण तथा परिस्थितियों का शिकार नहीं बनता। वह स्वंय को समायोजित करता है या स्वयं वातावरण के अनुकूलन बन जाता है। बुद्धि शब्द मनोविज्ञान की ही नहीं, सभी सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों की दुनिया में महत्वपूर्ण है। व्यक्ति की कार्य करने की कुषलता, व्यवहार, समायोजन, समस्या–समाधान आदि अनेक ऐसे पक्ष है जहाँ व्यक्ति अपने बुद्धि से कार्य करता है तथा सफलता प्राप्त करता है। स्टर्न के अनुसार "बुद्धि जीवन की नवीन समस्याओं के समायोजन की सामान्य योग्यता है।"

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि मानव जीवन का प्रमुख पहलू है। छात्र–छात्राओं के लिये ये जरूरी है कि वे अपने संवेग पर नियंत्रण कर सकें और उसे सही समय पर प्रस्तुत करने की क्षमता भी उनमें होनी चाहिए। उच्च मानसिक विकास में संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। छात्र–छात्राओं की पढ़ाई पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। अगर छात्र–छात्राओं में मानसिक नियंत्रण न हो तो वे तनाव में आ जाते है। हीनता की भावना उनमें आ जाती है। अगर छात्र–छात्राओं में मानसिक रूप से मजबूत हो जाते है तो हीनता व तनाव के स्थान पर आत्म सुरक्षा व आत्म विश्वास की भावना आ जाती है। संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि के क्षेत्र में यह एक नया प्रत्यय है। इस प्रकार की बुद्धि का तात्पर्य उस दक्षता से है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने तथा दूसरों के संवेगों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करता है।

संवेगात्मक बुद्धि के चार प्रकार बतायें है।

- स्वजागरूकता
- सामाजिक जागरूकता
- स्वप्रंबंधन
- संबंध प्रंबधन

संवेगात्मक बुद्धि के स्वरूप के बारे में निम्नलिखित तथ्य मुख्यतः दृष्टि में आते है–

- सांवेगिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि का एक प्रकार है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने एवं दूसरे के भाव एवं संवेगों को प्रंबंधित करता है।
- संवेगात्मक बुद्धि की सहायता से हम अन्य व्यक्तियों के मध्य भिन्नता की पहचान कर पाते है।
- संवेगात्मक बुद्धि – स्वयं के अन्य व्यक्ति के संवेगों की पहचान करता है तथा उनका प्रबंधन करता है।

संवेगात्मक बुद्धि मानव जीवन में बुद्धि लब्धि से अधिक उपयोगी है। जब छात्रों की रूचि, क्षमता, योग्यता के अनुसार शिक्षण का कार्य करेंगे तभी विद्यार्थी उसके द्वारा प्रदान किये जाने वाले ज्ञान को ग्रहण कर सकेंगे। विद्यार्थियों के संवेगात्मक होने के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षण कौशल को विकसित करें, विभिन्न शिक्षण तकनीकी में सुधार करें। ऐसे प्रशिक्षणार्थी जो सीखने में कौशल को विकसित नहीं कर सकते, वे अपने विषय को प्रभावशाली नहीं बना सकते। बहुसूचना माध्यमों, इंटरनेट तथा डिजिटल नेटवर्क जैसी प्रौद्योगिकी, शिक्षा पर गहरी छाप छोड़ सकती है। इस क्षेत्र में कम्प्यूटर आधारित शिक्षा का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चों को उन्नत कौशल युक्त बनाने के लिये कम्प्यूटर सहायता प्राप्त अधिगम आवश्यक है। इसके प्रयोग से बाल केन्द्रित शैक्षिक क्षेत्रों के सपने पूरे होने की आशा है। कम्प्यूटर शिक्षा एक सामान्य मंच उपलब्ध कराता है जहाँ शिक्षक और छात्र दोनों साथ बैठकर अधिगम वातावरण की खोज करते हैं। इस प्रकार के वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। वातावरण के फलस्वरूप विचार एवं रूचि में परिवर्तन आ रहा है।

भारतवर्ष में कम्प्यूटर शिक्षा वर्तमान में विकास की ओर अग्रसर है। कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की रूचि में अंतर पाया जाने लगा है। कम्प्यूटर शिक्षा की इस दशा में सुधार हेतु उपाय किये जा रहे है। अतः हम कह सकते हैं कि सुधार हेतु शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन की दरकार है। शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन के लिये नागरिकों की रूचि में परिवर्तन के लिये नागरिकों की रूचि में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में शिक्षा बालकेन्द्रित है। अतः यह शिक्षक के व्यक्तित्व व रूचि पर निर्भर करता है। छात्र की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति रूचि व अरूचि का संबंध स्वयं शिक्षक की रूचि व अरूचि से संबंधित होता है। यदि विद्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति गहरी आस्था है तो स्वाभाविक रूप से उसके मार्गदर्शन में कम्प्यूटर शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों का सुझाव भी कम्प्यूटर शिक्षा की ओर होगा। इस प्रकार से छात्रों की रूचियों व विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ना स्वाभाविक है अतः इनमें से हम केवल किसी एक की ही रूचि को लेकर नहीं चल सकते हैं।

सुझाव

शिक्षा में कम्प्यूटर का प्रयोग कुछ वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हुआ है। इसी कारण सभी शिक्षा संस्थाओं में कम्प्यूटर शिक्षा की कमी महसूस की जा रही है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य छात्रों के हित का होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। कम्प्यूटर शिक्षा की प्राप्ति के लिये कुछ माध्यमिक स्तर में कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था वर्तमान में है परंतु कम्प्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में कुछ समस्याएं होने के कारण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा की सृजनात्मकता में परिवर्तन आता है।

- शिक्षा संस्थाओं में कम्प्यूटर शिक्षा के वास्तविक रूप में व्यक्त करने वाले कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।
- स्कूलों में कम्प्यूटर शिक्षा के शिक्षण शुल्क में कमी लानी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में परिवर्तन के साथ–साथ माध्यमिक स्तर को उच्च शिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे की शिक्षा में परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षण की नई विधियों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त हो सके।

- स्कूलों द्वारा पत्रिका तथा पत्रों का निर्गमन किया जाना चाहिए।
- कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति रूचि सकारात्मक बनाने में स्कूल प्रबंधन को प्रयत्नरत् होना चाहिए।
- समस्त स्कूलों में कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए।
- भारत में व्यवसायिक शिक्षा पर बल देने की आवश्यकता होगी।
- समस्त स्कूलों को समय–समय पर कम्प्यूटर शिक्षा से लाभ की जानकारी देनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को कम्प्यूटर के सदुपयोग की ओर आकर्षित करने की आवश्यकता है।
- कम्प्यूटर शिक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर शैक्षणिक संस्थाओं का वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल होना चाहिए।
- वर्तमान कम्प्यूटर शिक्षा पद्धति में आवश्यक परिवर्तन किया जाना चाहिए। शिक्षण पद्धति कार्य प्रधान हो एवं छात्रों की रूचि के अनुकूल हो।
- कम्प्यूटर शिक्षा के द्वारा छात्रों का शारीरिक, मानसिक, समाजिक एवं अध्यात्मिक विकास हो।
- समस्त स्कूलों में व्यवसायिक शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- विज्ञान स्तर के महत्व को प्रत्येक स्तर पर स्वीकार किया जाना चाहिए।
- शिक्षा संस्थाओं में कम्प्यूटर शिक्षा के वास्तविक रूप को व्यक्त करने वाले कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहने चाहिए।
- अवकाश के समय में कम्प्यूटर के सदुपयोग की प्रेरणा विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए।
- समय–समय पर स्कूलों द्वारा कम्प्यूटर शिक्षा पर सेमीनार का आयोजन किया जाना चाहिए।
- समय–समय में होने वाले वैज्ञानिक अविष्कारों के बारे में पूर्णतः जानकारी प्राप्त होनी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में परिवर्तन के साथ विद्यार्थियों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण कार्य में शिक्षण संबंधी औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- यदि विद्यार्थी कक्षा, विद्यालय के वातावरण में समन्वय रखता है तो उसकी सृजनात्मकता में वृद्धि होगी।
- शिक्षण प्रक्रिया से संबंधित विद्यार्थियों को पूर्णतः स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए जिससे कि बिना किसी अवरोध के स्वतंत्र वातावरण में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर सके।

सन्दर्भ

1. कपिल एच. के. एवं हर प्रसाद भार्गव, (1984): अनुसंधान विधियाँ" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. भटनागर, सुरेश (1996): "शिक्षा मनोविज्ञान", आर.एल. बुक डिपो, मेरठ,
3. भार्गव, एवं भार्गवः "मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण एवं मापन" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,
4. राय, पारसनाथ (1999): "अनुसंधान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
5. आस्थाना एवं अग्रवालः मनोविज्ञान शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,
6. एपिक (1987).: "कम्प्यूटर के प्रति विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन" राखी प्रकाशन, आगरा